डायरी लेखन से शिक्षा

शिवरतन थानवी

बच्चों में स्वतंत्र एवं रचनात्मक लेखन के विकास के लिए डायरी लेखन एक उपयोगी गतिविधि हो सकती है। शर्त यही है कि इसे आरोपित नहीं किया जाए। यह लेख बच्चों के साथ डायरी लेखन की शुरुआत करने और उसके जरिए दुनिया को देखने-समझने के नजरिए पर पड़ने वाले असर को बहुत ही सहजता से रेखांकित करता है।

एक गतिविधि ऐसी है जो शिक्षण कार्य का अंग भी हो सकती है और सह-शैक्षिक गतिविधियों में भी स्थान पा सकती है। एक बात का जरूर ध्यान रखना है कि यह अनिवार्य न बने। इसे स्वैच्छिक रखना बहुत जरूरी है। तभी यह असरकारक बनेगी।

यह गतिविधि है डायरी लेखन। जानते तो होंगे आप सभी लोग पर ध्यान शायद ही कभी दिया हो। ध्यान दीजिए। जरूरी नहीं कि यह काम भाषा-शिक्षक ही करे। भाषा-शिक्षक भी कर सकता है और अन्य विषय शिक्षक या स्वयं संस्था प्रधान भी कर सकते हैं। स्टाफ में तय हो कि कौन शिक्षक अपनी कक्षा को डायरी लेखन की प्रेरणा देगा। या संस्था प्रधान घोषणा कर सकता है कि निजी अनुभवों को डायरी के रूप में लिखना जहां एक ओर भाषा विकास में मदद करता है वहां वह सोचना भी सिखाता है और अच्छे स्वभाव अपनाने का अभ्यास भी कराता है। इससे चारित्रिक शिक्षा होती है और नैतिक स्तर भी ऊंचा उठता है।

कैसे लिखेंगे डायरी हमारे विद्यार्थी और क्यों लिखेंगे, यह हमें उन्हें समझाना होगा। एक तो यह बताना होगा कि वे जो भी अपने आस-पास देखते हैं उसे लिखना है, जो अनुभव करते हैं उसे लिखना है और इसलिए लिखना है कि अपने-आपको बताना चाहते हैं कि हम क्या देख रहे हैं और हम क्या सोच रहे हैं। एक तरफ से हम हमारा ही इतिहास लिख रहे हैं और हम इसलिए भी लिख रहे हैं कि हमें लिखना सीखना है। लिख-लिख कर यह जानना है कि हम कैसा लिख सकते हैं और अपने लिखे को कैसे और अच्छा बना सकते हैं। यह रोज का काम नहीं है। जब मर्जी हो तब कर करने का काम है।

शिक्षक की भूमिका यह है कि वह विद्यार्थियों में यह मर्जी पैदा करे। उनके सामने यह तथ्य रखें कि वे सभी लेखक हैं और उन्हें अपने निजी जीवन की कहानी एक किताब में उतारनी है। उनका निजी जीवन इस किताब में प्रतिबिंबित होना है। छोटी-सी कॉपी से वे यह किताब शुरू कर सकते हैं। इसका नाम रख सकते हैं 'मेरी डायरी' या 'मेरी किताब' या 'मेरी कहानी'। कॉपी बनाएंगे, कॉपी पर नाम लिखेंगे, तब विद्यार्थी की मर्जी बनेगी उसमें कुछ लिखने की। मर्जी बनेगी अपने जीवन की घटनाओं पर नजर डालने की, उन घटनाओं में से आज के लिए चुनने पर विचार करने की। यह नजर डालना, चुनना और चुनने के लिए विचार करना ही उसके उस दिन का जरूरी काम हो जाएगा। डायरी का पन्ना उसके जीवन के उन पलों में आश्चर्यजनक चमत्कार पैदा करेगा। वह उस चमत्कार को महसूस करेगा और लिख-लिखकर पुलकित होगा। जरूर प्रसन्न होगा।

हम डॉक्टर हों, इंजीनियर हों, दुकानदार या व्यापारी या उद्योगपति हों, सामाजिक या राजनीतिक कार्यकर्ता हों, नेता हों, सैनिक हों

लेखक परिचय

शिविरा पत्रिका तथा नया शिक्षक/टीचर टुडे का 13 वर्ष संपादन। संयुक्त निदेशक (शिक्षा) पद से 1988 में सेवानिवृत्त। कुछ पुस्तकें लिखीं, कुछ का संपादन और अनुवाद किया। विशेष चर्चित पुस्तक 'आज की शिक्षा कल के सवाल'।

या अधिकारी हों, किसी भी क्षेत्र में हों या किसी भी पद पर हों, चाहे शिक्षक ही क्यों न हों, यदि हम डायरी लिखते हैं तो जरूर प्रसन्न होते होंगे। विद्यार्थी जीवन से यदि हम इसके लाभ को समझकर डायरी लिखने का अभ्यास डाल सकें तो फिर देखिए कि कैसा आपका चरित्र निखरता है और व्यक्तित्व बनता है। चारित्रिक विकास के लिए और व्यक्तित्व निर्माण के लिए डायरी भी एक उत्तम माध्यम है। हमें विद्यालयों की पाठ्यक्रमेतर प्रवृत्तियों में इसे भी स्थान जरूर देना है।

डायरी लिखना भी एक तरह का पत्र लिखना है। यह पत्र खुद को लिखा जाता है। किसी को कोई पत्र हम कब लिखते हैं? जब कहने को कुछ हो। इसके उलट कर कहें तो यों कहेंगे कि जब पत्र लिखना तय कर लिया तो हम सोचेंगे कि क्या लिखें। यह सोचना भी एक बहुत बड़ा काम है। सोचकर लिखने को कोई प्रसंग ढूंढ़ना पड़ता है। यह प्रसंग ढूंढ़ निकालना एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सृजनात्मक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया हमारा व्यक्तित्व बनाती है और हमारे चरित्र को विकसित होने में मदद करती है।

यही हाल डायरी लेखन का है। वह भी सृजनात्मक प्रक्रिया इस अर्थ में है कि वह भी एक पत्र खुद को जिसमें लिखने के लिए कोई विषय, कोई मसला-मसाला ढूंढ़ना पड़ता है। बिना प्रसंग क्या लिखेंगे? प्रसंग सोचिए और लिखिए। यह तो तय करना ही है कि लिखना है। तय करेंगे तभी कोई प्रसंग पैदा होगा। एक संस्था ने अपने शिक्षार्थियों में डायरी लेखन का अभ्यास कराने के उद्देश्य से 24 पेजी कॉपियां तैयार कराईं, जिनके प्रथम आवरण पृष्ठ पर 'मेरी किताब' शीर्षक देकर नाम, कक्षा, उम्र आदि अंकित किया तथा आवरण के अंतिम पृष्ठ पर शीर्षक रूप में सुझावात्मक निर्देश लिखा-

> यह आपकी किताब है। आप इसके लेखक हैं। आप इस किताब में कुछ भी लिख सकते हैं। कभी भी लिख सकते हैं। अग-जग की बातें, दीन-दुनिया की बातें, मेरी-तेरी उसकी बातें। गांव की बातें, शहर की बातें, गली-मोहल्ले की बातें, जो सुनी आज या कल। पास-पड़ोस की बातें जो सुनी थीं आज या कल। बाजार में क्या देखा-सुना, आज या कभी। मंदिर-मस्जिद में क्या देखा-सुना आज या कभी। त्यौहार कैसे मनाया इस बार। किताब क्या पढ़ी, थोड़ा उसका हाल। किस किताब में क्या पसंद आया- थोड़ा उसका हाल। नानी-दादी ने जो कहानी सुनाई वह क्या थी। चुटकुला जो पसंद आया वह क्या था। जो गीत सुना गांव-गली में वह क्या था। जो गीत सुना त्यौहारों पर वह क्या था। पूरा-अधूरा जितना भी संभव हो। खेलों की बातें- कुश्ती, कबड्डी, गुल्ली-डंडा, मारदड़ी, फुटबाल आदि। खेतों की बातें- क्या-क्या करते हो वहां। पेड़ों की बातें- कैसे-कैसे कितने पेड़ देखे कहां कब। घास-फूस की बातें- काम की घास। काम का फूस। काम का कबाड़- कबाड़ के उपयोग। दूध-दही-छाछ की बातें। ढोर-डांगर की बातें। भेड़-बकरी और रेवड़ की बातें। गाय-भैंस-बैल की बातें। कविताएं जो पसंद आईं। फिल्में जो अच्छी लगीं- थोड़ा हाल। फिल्में जो बिल्कुल पसंद नहीं आईं- थोड़ा हाल। अच्छे गुरुजी- कैसे अच्छे, क्यों अच्छे। गांव-शहर के बूढ़े-बुजुर्गों की बातें- कौन क्या कहता है। आप उनकी क्या मदद करते हैं। चिड़ियों की बातें- रूप, रंग, आवाजें। चिड़ियाघर का वर्णन। अजायबघर या म्यूजियम का वर्णन। मित्र, शिक्षक, पड़ोसी, व्यापारी, खिलाड़ी, कुछ भी।
>
> जब भी लिखो, जितना भी लिखो, उस पेज पर तारीख जरूर लिखो।

ऐसे ही आप और भी नए-नए सुझाव दे सकते हैं। जो स्वयं स्वेच्छा से कभी भी कुछ भी अपनी कॉपी में डायरी रूप में कुछ लिखने की चेष्टा करेगा उसका भाषा ज्ञान बढ़ेगा, अभिव्यक्ति शक्ति बढ़ेगी और व्यक्तित्व निर्माण होगा। दुख भरे दिनों और सुख भरे दिनों का वर्णन करना आ जाएगा।

अमेरिका की एक शिक्षक एरिक ग्रुवेल ने अमेरिकी शहरों के झोंपड़-पट्टी वाले हिंसा व गरीबीग्रस्त इलाकों की स्कूलों में डायरी-लेखन सिखाते-सिखाते छात्र-छात्राओं में ऐसा आत्मविश्वास भरा, ऐसा संस्कार दिया, कि वे उपद्रवी हिंसक स्वभाव छोड़कर सुसंस्कृत नागरिक बन गए और ऊंचे-ऊंचे पदों पर काम करने लायक हो गए। डॉक्टर, इंजीनियर,

पायलट, कलाकार व साहित्यकार बन गए। उनके इस प्रयोग को आप उनकी पुस्तक 'फ्रीडम राइट्र्स डायरी' (ब्रोडवे बुक्स, न्यू यॉर्क) में विस्तार से पढ़ सकते हैं। उनको उनकी इस सफलता के कारण कई कॉलेजों व विश्वविद्यालयों से निमंत्रण मिले और उनके इस चमत्कारी कार्य पर फिल्म भी बनी। मैंने फिल्म से ही इस संबंध में पहली सूचना पाई और पुस्तक की खोज बाद में कर वह भी मंगवाई।

डायरी लेखन की महत्ता पर ध्यान केन्द्रित कर जो शिक्षक इस विधि का व्यवहार अपनी कक्षाओं में करेंगे वे जरूर इसका लाभकारी प्रभाव देख सकेंगे।

अंत में दो शब्द स्वयं शिक्षकों की डायरी के लिए। विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति का अभ्यास करवाने, उनका स्वभाव बदलने, उन्हें नए संस्कार देने और उनका व्यक्तित्व निर्माण करने में मदद के उद्देश्य से आप उनको डायरी लिखवाते हैं तो आप स्वयं भी डायरी लिखकर अपना खुद का बहुत बड़ा भला कर सकते हैं। फायदा उठा सकते हैं। शिक्षक की एक डायरी स्कूल प्रशासन लिखवाता है। दूसरी डायरी वह निजी लाभ के लिए स्वेच्छा से लिख सकता है। जो भी अनुभव विद्यार्थियों के बीच और स्कूल स्टाफ के बीच उसे होते हैं उन्हें वह समय-समय पर घर की डायरी में लिखता रहे तो उसे भविष्य में बहुत लाभ होगा। व्यक्तित्व बनेगा। चारित्रिक उत्थान होगा। जब भी वह डायरी लिखने बैठेगा उसे सोचना पड़ेगा कि क्या घटना ली जाए और उसे कैसे लिखा जाए। इससे वह चिंतनशील बनेगा और उसकी लेखन-शैली व भाषा प्रांजल बनेगी। ज्यों ही वह एक दो पेज लिख लेगा उसे सफलता की अद्भुत प्रतीति होगी। लिखना आसान नहीं है। लिखेगा तो जानेगा कि लिखना कितना कठिन है, कितना सरल है और फिर उसे समझ आएगा कि लाभकारी होने के साथ-साथ कितना आनन्ददायक भी है। तब वह खुद को अपने विद्यार्थी की जगह रखकर सोचना सीखेगा। वह इस प्रक्रिया से जो सोचना सीखेगा उससे उसकी सृजनात्मक शक्तियां विकसित होंगी। तब वह विद्यार्थी के सृजनात्मक विकास का भी आयाम पा सकेगा। विद्यार्थियों का और उसका साथ-साथ विकास होगा। भविष्य में उसकी यह निजी डायरी उसके शैक्षिक चिंतन की प्रतिरूप पुस्तक का रूप भी ले ले तो कोई आश्चर्य नहीं। ◆